

# समाज

★ समाज के 6 भौतिकीयः

1. तत्पुरुष - तत्पुरुष समाज में काम की विभक्तियों का लोप होता है। तत्पुरुष का अर्थ है सर्व पूर्व पद गरीब और उल्लंघन पद सधान नहीं है। इसके 6 भौतिकीय होते हैं। गरीब
2. कर्मधारी - कर्मधारी समाज में पूर्व पद सधान और उल्लंघन प्रधान हैं। गरीब होता है। पूर्व पद विशेषण और उल्लंघन पद विशेष होता है।
3. हविगु - हविगु समाज में पूर्व पद संचानन्दी होता है।
4. छंड - छंड समाज में होनीं पद प्रधान होते हैं। विलय इक्षु इसके उत्पादण है।
5. अवधीभाव - अवधीभाव समाज में पूर्व पद उच्चावधी होता है।
6. बहुत्रीति - बहुत्रीति समाज में पूर्व और उल्लंघन पद होने पर प्रधान न होकर, कोई तीसरा पद सधान होता है, अनेक शब्दों के लिए उक्षु इक्षु इसके उत्पादण है।

★

उत्पादण -

- \* तत्पुरुष - हनीवडा (हनी में इक्षु नहीं वडा)
- \* कर्मधारी - नीमगाड़ (नीली और गाड़)
- \* हविगु - पंचवटी
- \* छंड - भाता - पिठा
- \* अवधीभाव - उआजीबन
- \* बहुत्रीति - दशा तन

अवधीभाव समाज के लिए वाविशेषण का काम करते हैं।

# सूचना लेखन

Page No. 2  
Date : ४/५/२५

क.ष.ग स्कूल

सूचना

टिकाक - ५ अप्रैल २०२५

विष- वृक्षारोपन समारोह के

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि समवार ७-५-२०२५ को स्कूल में वृक्षारोपन समारोह आयोजित किया जाएगा। सभी छात्रों द्वे अनुरोध हैं कि वह धरती की बचाने के लिए इस समारोह में बड़-बड़ कर भाग लें।

प्रधानाचार्य

BRANKO®  
Never S.

पर्वी

- संत कबीरहास

- प्रेती वाणी बोलिए, मन का आपा छोई।  
अपना नन सीतल करे, और न को सुख होय।

कबीरहास जी कहते हैं कि प्रेती मीठी वाणी बोलनी चाहिए तिससे हमारे मन का अङ्गकार खल्प हो जाय। हमारी वाणी न सिर्फ हमारे मन को शीतल करे बल्कि हमसरों को भी सुख हो। अद्धुर वाणी ये मन की शांति और हमसरों के द्विल में दुश्मि पूरा होती है। इससे हमारी सेहत भी ठीक होती है।

- कस्तुरी कुड़ल बसे, मृग हूंटे बन गांडि।  
प्रेसे धटि राम है, हुनिया है बै नांडि।

कबीरहास जी कहते हैं कि कस्तुरी द्विरण की नाभि में ही हत्ती है, लैकिन वह उसे जंगल में इधर-उधर हूंटता है। इसी तरह भगवान हमारे हृदय में ही बसे हैं, परंतु हमसावउन्हें मंदिर, गिरजाघर, मस्जिद, गुरुहवारों से हूंटता है,

- जब ये था तब हरि नहीं, अब हरि है भै बांडि।  
सब अंधियारा भिट गया, जब हीपक है बा भांडि।

कबीरहास जी कहते हैं कि संज्ञा में हम कोई अपने से नब मेरे अंदर से अङ्गकार था, तब भगवान मुझसे हूंट दे। लैकिन जब मेरा अङ्गकार खल्प हो गया और मेरे भगवान की आत्मसात किया, तब मेरा मन शांत हो गया। जैसे हीपक से अंधकार भिटता है, वैसे ही अङ्गकार के त्याग से भगवान का ज्ञान होता है।

4. सुखिया सब संसार दूँ, खाये अनु सीवे।  
दुखिया हास कबीर दूँ, जागो अनु रोवे।

~~कबीरहास जी कहते हैं कि संसार में ग्रे तरह के लोग होते हैं, एक वह जो मांसाकृत सुष्ठुप्ति से छुग रहते हैं उसके बाहर बाहर जाते हैं। दूसरे वह जो कबीर जी की तरह भगवान की प्राप्ति, उनसे मिलने के लिए बहुत भर अल्पि करते हैं और जानते हैं। वह भगवान न मिलने पर दुक्षि नहीं होते हैं।~~

5. बिरह शुबंगम तन बर्स, घंक न लागू कोइ,  
राम बिधोगी ना जिव, जिव तो बर्स दूड़।

~~बिरह~~

~~कबीरहास जी कहते हैं कि राम का विवरण एक जड़हिल सांप की तरह तन में बस जाता है। राम के बिना जीव वर्ष ही उगार कोई दूसरे लिंग नहीं होता है और लौटा ही वह पागल हो जाता है। कोई यत्र वह इस सांप के तहर की नहीं निकाल सकता।~~

6. निरुक वैदा राखिए, उगाँगाला कुटी बँधाइ।  
बिन साबण पाँची बिना, निरम्य को सुभाइ।

~~कबीरहास जी कहते हैं कि जालीचक की अपनी पास रुक्न चाहिए क्योंकि वह बिन। साबुन और पानी के दूसारे दूषण को बताकर उसे शुद्ध उसी निमिल बना होता है। वह दूसारे दूषण का साध्यम नहीं।~~

पीछी पढ़ि पढ़ि जग मुका, पंडित भया न कीइ।  
7. मैंके आधर पीछ का, पढ़ि सु पंडित होइ।

~~कवीर जी कहते हैं कि किताबें पढ़कर कोई पंडित नहीं होता। असली पंडित वही है जो प्रेम का ज्ञान रखता है और प्रेम के अद्वार बोले, अर्थात् ऐसी बाणी,~~

8. हम घर जात्या आपणां, लिया मुरादा होइ।  
अब घर जात्या तास का, जे चले हमारे साथ।

~~कवीर जी कहते हैं कि जन की मशाल से उज्जीत और अद्वार का घर जला दिया है, अब वह जन की मशाल से, जो उनके साथ चलेगा उसका अद्वार का घर भी बह जला होगा।~~

9. एसी बाणी बोलते से औरों को छुष्ट और उसी तन को शीतलता कैसा प्राप्त होती है?

उत्तर कवीर जी के प्रस्तुत होइ-

«एसी बाणी बोलिए, यह का आपा छोइ।  
अपना तन शीतल कर, और ऊंचे को छुष्ट होइ।»  
मैं बहुत सुंदर सीष ही हूँ कि व्यक्ति को अपने संपूर्ण नीवन में मधुर बाणी का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि मधुर वचनों के प्रयोग से क्रीधित व्यक्ति का क्रीध दृष्टिर हो जाता है। जिससे उसका क्रीध शांत हो जाता है। क्रीधित व्यक्ति मधुर वचन सुनकर सुष्ट की अनुभूति प्राप्त करता है। कभी मधुर वचनों के प्रयोग से हमारे स्वयं के तन की शीतलता निलीटी है। मधुर वचन सभी हुओं के लिए औपचारिक है। इससे हमारा वक्त चाप भी ठीक रहता है।

प्र२) हीपक द्विकरे पर आंखेणा कैसे मिट जाता है?

उत्तर जब तक मनुष्य के बन वैश्वर का भाव रहता है, अर्थात् वह, घमंड ये लीन रहता है तब तक उसके हृदय ये ईश्वर का निवास नहीं हो सकता। जब ज्ञान रूपी हीपक उसके हृदय ये जल ग़ाला है तब अज्ञानता कभी अंगकार, स्वंय ही नहीं हो जाता है। अर्थात् ज्ञान का हीपक जलने से घमंड का नाश हो जाता है और ईश्वर मनुष्य के हृदय ये निवास करने लगता है।

प्र३) ईश्वर कण-कण ये व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं हृष्ट पाते?

उत्तर ईश्वर कण-कण ये व्याप्त है, परंतु अज्ञानता वश मनुष्य उक्त भंडिरों, गिरजाघरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में हृष्ट होता है। तबकि ईश्वर तो उसके स्वंय के हृदय ये निवास करते हैं। मनुष्य की परिस्थिति उस द्विरण के जैसी है कि जो सुगंधित कस्तूरी की छुश्चू के पीट पागल होकर जंगल-जंगल उसे हृष्ट होता है। ठीक उसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य अज्ञानता वश ईश्वर की पावे के लिए यहाँ बहाँ घटकर्ता हिरता है और बाद आँड़बरों में फसा रहता है।

प्र४) यंसार में सुखी व्यक्ति कौन है, और हुकी कौन? यहाँ 'सौमा' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इनका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है?

उत्तर कवीर जी के अनुसार युक्ति वे व्यक्ति जो ब्राते हैं, पीते हैं और सो जाते हैं, वह व्यक्ति सुखी है, पैसे व्यक्ति और तिक सुखी की आड़ में भौंड-भाया के बीच में पासे जीवन चक्र में उलझी रहते हैं। हुकी व्यक्ति वह जो रात-रात शर जागकर ईश्वर की घाँट में उनसे मिलने के लिए रहते हैं, और उन्हें पाने के लिए रहते हैं। और उन्हें पाने के लिए तप करते हैं। दूसरे व्यक्ति माझे को प्राप्त हीते हैं।

प्र५) अपने स्वभाव की निर्मल रस्ते के लिए कवीर ने क्या उपाय सुझाया है?  
 और अपने स्वभाव को निर्मल रस्ते के लिए निष्ठक व्यक्ति को उपने  
 वाले में कृतिश बनाकर रस्ते को कहा है। क्योंकि जब वह बहुत बात-  
 बात पर हमारी निछो करेगा, हमारी कथियाँ निकालेगा, तो हमारा  
 चरित्र निना साकृत-पानी के निर्मल द्वी जाएगा। क्योंकि उसके  
 द्वारा बहारी गड़ कथियों में हम स्वयं द्वी सुधार करेंगे।  
 तब हमारे चरित्र से कथियाँ भी जाएँगी, तब हमारा  
 चरित्र प्रश्नावी बन जाएगा। कथियाँ

प्र६) एक अधिक पीव का, पहुँच पंडित हैं - वक्ति का अर्थ  
 स्पष्ट करें।  
 और एक अधिक पीव का पहुँच पंडित हैं, वक्ति के माध्यम  
 से हमें युद्ध से दूना चाहते हैं कि मीठी-मीठी  
 किताबें पढ़ने से कोई श्री व्यक्ति जानी नहीं बन जाता।  
 इस संसार में हमारी-लाली लौग आए, मीठी-मीठी किताबें  
 पढ़ीं पर कोई श्री जानी नहीं बन पाया कवीर जी के  
 अनुसार जानी व्यक्ति वही है, जिसने प्रेम रुपी अन्नर  
 को पहुँच लिया है। अर्थात् प्रेम जिसके जीवन का  
 अंश है वही व्यक्ति सही मायने के जानी व्यक्ति है।

प्र७) कवीर की उद्धृत साधियों की भाषा की विशेषज्ञा स्पष्ट करें।  
 और कवीर जी कारा रचित साधियों से अवधी, राजस्थानी,  
 खांजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का प्रश्नाव है।  
 इसलिए उनकी भाषा को प्रस्तुत किया जाना है।  
 उनकी भाषा साधुओं द्वारा दुनिं के कारण  
 ऐसी साधुकामी श्री कहलाती है।

## कविता - २

# तौप

- वीरेन उग्रवाल

शीर्षः-

कविता 'तौप' वीरेन उग्रवाल जी की सुंदर रचना है। यह कविता हमें सुंदर शीख देती है कि हम अपने पूर्वजों की धरोहर को सम्भाल कर रखें क्योंकि हमें नहाह्य यह रखना चाहिए कि जो गलतियाँ हमारे पूर्वजों ने की वह हमें नहीं करनी क्योंकि उन्हीं गलतियों के कारण हम 200 वर्ष तक अंग्रेजों के उलाम रहे। बुराई पर नहीं अद्वारा की जीत होती है। इक्तिशाली का मौहर एक न पक देन बढ़े हो ही जाता है। परिस्थिति हवेशा एक जी नहीं रहती,

**प्र० १)** किसत में भिली चीजों की संभाल क्यों होती है?  
**उत्तर** उनकी संभाल इसलिए होती है क्योंकि वे हमारी सांस्कृतिक धरोहर होती हैं, जो हमें की प्रचलित उपत्थियों, तकालीन परिस्थितियों और पूर्वजों के अनुभव की जानकारी देती है। वई पीढ़ी उनसे सील ले सके, इसलिए उन्हें संभाला जाना है।

**प्र० २)** इस कविता में आपको तौप के बारे में क्या जानकारी दियी गयी है?  
**उत्तर** तौप 1857 के संग्राम में अंग्रेजों का इसतोषाल हुई थी, जिससे कई स्वर्याओं के घबड़े हुए। अयंकर तौप अब कभी के क्लेन, चिड़ियों की गपशप में और गोँधों के घोसने के कृप में बहल गई है। यह समय की ताकत और परिवर्तन का प्रतीक बन गई है।

8/1/2025

1. ~~Top of plateau - slopes 9°  
10° - 15° - 20° SLOPES  
if the slope - 10° there is a plateau on the  
1. If the top slope 10°  
the slope after 10° is 15° or 10°  
the slope is 10° slopes 15° the same point  
the top slopes 10° 15° 20° etc if you do the  
if the slope not yet for the help part~~

# पाठ-1

## कुर्म शुद्ध साहस्र

- प्रेसर्च-

### ★ मुहावरे:-

1. प्राण सूखना - उर के कारण बहुत त्याहा घबराहट होना।
2. दुःसी बैल न होना - कोई कार्य सरल या आसान न होना।
3. पूरा-मौरा नत्थ छीरा - अनतिरीक्षण या साधारण व्यक्ति।
4. जाँचे पौड़ना - कठी मैहनत करना।
5. बून जलाना - कठीर परिज्ञास करना।
6. जिगर के दुकड़े-दुकड़े होना - अत्यधिक हुखी होना।
7. दिम्बत दूटना - साहस कम होना।
8. जान तीड़ मैहनत करना - बहुत अधिक मैहनत करना।
9. हूँके पाँव आना - उपके से आना।
10. हुड़कियाँ खाना - डांट सुनना।
11. आड़े हाथी लैना - कठीरता से आलौचना करना।
12. घाव पर नमक छिड़कना - हुखी व्यक्ति को ज्योर हुखी करना।
13. तलवार छीचना - लड़ाई के लिए त्यार होना।
14. अंधी के नाप में बटर लगना - अयोग्यता में भूल्यवान चीज मिलना।
15. चुल्लुआर पानी देने वाला - कठिन सभ्य में सहापता करने वाला।
16. हाँती पसीना आना - बहुत कठिन होना।
17. लीड़ के चौरे चबाना - बहुत कठिन कार्य करना।
18. चक्कर खाना - अभित होना।
19. आट-डाल का भाव भालूम होना - जीवन की कठिनाइयों का पता होना।
20. जमीन पर पाँव न रखना - अत्यधिक छुश्शी होना।
21. हाथ-पाँव फूल जाना - घबराहट या चिंता से बैचैन होना।

प्र०) कथा नायक की कनि किन कार्यों में थी?  
उत्तर) कथा नायक वाली हीटे भाई की कनि पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, धूम्रता-फिरने, कहानी-कविता और आसपास की जीजों में ज्याहा थी। वह कभी कंकनियाँ उछलता, कभी कागज की तितलियाँ उड़ाता, साथियों के साथ खेलता, चार ही बारी चढ़कर कूदता। कभी फ्राटक पर सौटरगाड़ी के बड़े लैता।

प्र२) बड़े भाई साठब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

उत्तर) बड़े भाई साठब हृषीशा पूछते - "कहाँ थे?"। इसका जवाब हृषीशा बोने नी रहता। उनका ध्यान हृषीशा इस कात पर रहता था कि छोटे भाई पढ़ाई से अटक न जाए।

प्र३) दूसरी बार पास हीने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर) दूसरी बार पास हीने पर छोटे भाई को अपने ऊपर धोड़ा दिमंड हो गया था। उसे लगते लगा कि बिना ज्याहा पढ़े हुए वह उच्छे अंक ला सकता है। इसी कारण वह फिर से खेलने-कूदने और भोज-भस्ती में लग गया।

प्र४) बड़े भाई साठब छोटे भाई से उम्र में किने बड़े थे और वे कौन-सी कहाँ बो पढ़ते थे?

उत्तर) बड़े भाई साठब उम्र में पाँच साल बड़े थे और नींवी कहाँ ने थे। छोटे भाई पाँचवीं में था। वे बड़े हीने के बावजूद पाँच साल की बजाए शिर्फ तीन साल आगे थे।

**प्र५)** बड़े भाई साहब टिमांग को आगम हैने के लिए क्या कहें  
**उत्तर** वह स्वशाव से बड़े संव्ययनशील थे। सहम किताब में छोटे रहते। टिमांग को आगम हैने के लिए कभी कोई पर, किताब के हालियों पर चिह्नों, कुली, विलियों की तस्वीरें बनाया करते। कभी एक शेर की बार-बार सुंदर उज्जरामें नकल करते। कभी दूसी शब्द रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ, व कोई सामृद्ध नहीं।

**प्र६)** छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइप-टेक्स्ट बनाते समय क्या-क्या सौचा और पिर उसका पालन क्यों नहीं कर सका  
**उत्तर** छोटे भाई ने सौचा कि वह अब मन लगाकर पढ़ाई करेगा और बड़े भाई को कोई शिकायत का सौका नहीं हैगा। उसने नात ॥ बजे तक नहीं विषय के लिए समय विधायित किया था। उसने सौचा या कि वह सुबह हँ बजे उठकर पढ़ाई शुरू कर दूँगा। लेकिन खेल का मैंदान, उसकी दूरियाली, दूवा के हल्के झोंक, फूटबॉल, कबड्डी, वॉलीबॉल उसे अपनी ओर आ जाते थे, इसलिए वह टाइप-टेक्स्ट का पलान नहीं काम किया।

**प्र७)** एक दिन जब गुलामी-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई, बड़े भाई साहब के पास पहुँचा तो उनकी क्या प्रतीक्षिया हुई?  
**उत्तर** बड़े भाई साहब छोटे भाई को दृश्य उत्तराने उसे डाँटा और समझाया कि वह ज़पनी पढ़ाई पर दूँगा। गुलामी-डंडा खेलना उसके अविष्य के लिए लाभकारी नहीं है। उत्तराने करने की अवल जाने पर उसे घबड़ नहीं गया है, जबकि घमड़ तो रखने का भी नहीं हुआ।

प्र५) बड़े भाई की अपने मन की इच्छाएँ क्यों हुकारी पड़ती ही?  
 उत्तर नड़े भाई साहब, होटे भाई से पांच सम कड़े थे। यहि कह सही निवासों का पालन नहीं करते, तो होटा भाई भी उनके राज्य पर चलता। उन्होंने भी दूसरे उड़ाने, तभारों हुकारी का शाँक था, परंतु इसका प्रभाव होते पर न पड़े इसलिए उन्होंने अपनी मन की इच्छाएँ हटवा दी।

प्र६) बड़े भाई साहब होटे को क्या सलाह देते थे और क्यों?  
 उत्तर नड़े भाई साहब होटे को यह सलाह देते थे कि कह मन लगाकर अच्छे ये पढ़े, ज्याहा सम्पर्य वर्धन करो। अंग्रेजी पढ़ने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। यहि कह मेहनत नहीं करेगा, तो उसी हज़ेर में पड़ा रहेगा।

प्र७) होटे भाई ने बड़े भाई साहब के नाम व्यवहार का क्या प्राप्त हाल उठाया?

उत्तर होटे भाई ने बड़े भाई साहब के नाम व्यवहार प्राप्त हाल उठाकर अपनी मन मज़ी के अनुसार बान्दर खेलने जाना शुरू कर दिया। उसने मानलिया कि कह पहुँच पान पढ़े पास नहीं ही जाएगा।

प्र८) बड़े भाई की उट्ट-फटकार अगर न मिलती तो क्या होता भाई अबल आता?

उत्तर यहि नड़े भाई की उट्ट-फटकार न मिलती तो संभवतः हो भाई कक्षा में अबल न आएगा। बड़े भाई की सखती ने उसे मार्गदर्शन दिया, जिससे कह अनुशासन में रहा और अच्छे अंक प्राप्त करे अबल रहा।

प्र० १३) इस पाठ ने लेखक ने समूभी रिक्षा के किन तर्फ़-  
तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनसे  
सहमत हैं?

उत्तर लेखक ने शिक्षा में रद्दी की प्रवृत्ति और व्यवहारिक  
ज्ञान की कमी पर व्यंग्य किया है। वह दिक्षाते हैं कि  
कैवल किताबी ज्ञान से जीवन की समझ नहीं आती,  
उसके लिए अनुभव भी जरूरी है, मैं उनके लिए विचार  
से सहमत हूँ। जीवन में सफलता के लिए व्यवहारिक  
ज्ञान और अनुभव जरूरी हैं।

प्र० १४) बड़े भाई सानब के अनुसार जीवन की समझ के से  
आती है?

उत्तर बड़े भाई सानब कहते हैं कि जीवन की समझ किताबी  
ज्ञान से नहीं, बल्कि अनुभव से आती है। पाठ में  
हेडमास्टर अते ही ज्यादा ज्ञान रखता था, पर उसे  
उसके माता पी ने अपने अनुभव से पर छना था कि  
लेखक के हाथों में जिनके वसी ये नहीं लौगिंहों का  
धर पाते थे, उन्हें लेखक और उसका भाई  
महीने का ही लौगिंहों का छर्च भी कर समझते थे।

प्र० १५) छोटे भाई के मन में बड़े भाई सानब के प्रति अंदूरा क्यों  
उत्पन्न हुई?

उत्तर बड़े भाई सानब छोटे भाई के खेलकौठ में समय न गंवाकर  
पढ़ने की सलाह दीते थे, अधिमान न करने को कहते थे,  
वह छुट्टे भी पैसा नहीं करते थे, और उसे भी कहते थे।  
वह बड़े हीने के कारण पैसा करना अच्छा कर्तव्य समझते थे।  
इसे छोटे भाई के मन उनके प्रति अंदूरा उत्पन्न हुई।

प्रा(5) कड़े भाई की स्वभावगत विशेषज्ञता हैं बताएँ।  
उत्तर कड़े भाई साहब परिजनों थे, दिन-रात पढ़ते रहते थे, उपदेश देने में बहुत मात्र हैं। अनुशासनिय दौलत के साथ-साथ वह आदर्शवाली भी थी थे। वह छोटे भाई की नैक इंसान बनाना चाहते थे। वह अपने अनुभव की जान का छोटे भाई की भी दूत थे।

प्रा(6) कड़े भाई साहब ने जीवन के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों ज्ञानी कहा है?

उत्तर कड़े भाई साहब ने जीवन के अनुभव को अधिक ज्ञानी कहा। उनकी मत थी कि किताबी ज्ञान इटने का नाम है, जिससे जीवन की समझ और बुद्धि विकसित नहीं हो पाती। इसके विपरीत अनुभव से जीवन की सही समझ और बुद्धि विकसित होती है, जिससे जीवन के युग्म-द्वय से सरलता से पार पाया जा सकता है।

प्रा(7)  
प्रा(8)

पृष्ठ-२

# तताँरा वामीरा कथा - लीलाघर मंडल

प्र१) तताँरा वामीरो कहाँ की कथा है?

उत्तर तताँरा वामीरो कथा अंतुमान - निकोबार द्वीपसमूह की नोंकधा  
है। यह कथा तताँरा वामीरो के बलिदान के कारण  
सुनाई जाती है।

प्र२) वामीरो अपना गाना क्यों भूल गई?

उत्तर जब वह सचुद कि नारे बैठी गारी थी तब उसके ऊँची  
लहर उठी और उसे खिगो गई। वह नड़बड़ाते हुए में  
गाना भूल गई।

प्र३) तताँरा ने वामीरो से क्या पाचना की?

उत्तर तताँरा ने वामीरो से गाना पूरा करने की पाचना की।

प्र४) तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या शिति थी?

उत्तर तताँरा और वामीरो के गाँव की शिति थी कि पहिं किसी  
लड़के यालड़की को विवाह करना होता तो लड़के और  
लड़की का एक ही गाँव का होना ज़रूरी छोड़ा अर्थात्  
किसी लड़के यालड़की के वैवाहिक संबंध किसी हूसरे  
गाँव से न हो सकते थे।

प्र५) क्रोध में तताँरा ने क्या किया?

उत्तर तताँरा ने तलवार निकालकर पहले सौचने लगाए तब  
उसका क्रोध बढ़ गया, तो क्रोध के शयन के लिए  
उसने अपनी तलवार को धरती ये घोंपा दिया और  
तकत से उसे छींता दुआ दूर पहुँच गया। इसके बाद  
अचानक धरती ये दूर आई और धरती हो दिखाएँ  
मैंट गई।

प्र५) ततांर की तलवार के बारे में लोगों की क्या मत थी? उत्तर लोगों ने भानते थे कि ततांर की तलवार लकड़ी की डोनी के बावजूद दुर्विध शक्ति वाली तलवार थी।

प्र६) वामीरी ने ततांर को बैठकी से क्या जवाब दिया? उत्तर वामीरी ने ततांर को जवाब देने की जगह बैठकी से प्रश्न पूछा। वह ततांर का परिचय अनजाना चाहती थी। वह पर भी जानना चाहती थी कि ततांर उसे गांव का आमद बयां कर रहा था। वह उसे पर भी कहती है कि वह किसी दूसरे गांव के लड़के का उल्लंघन के कारण नहीं है।

प्र७) ततांर-वामीरी की त्यागभयी मृत्यु से निकोबार क्या परिवर्तन आया?

उत्तर निकोबारी दूसरे गांवों से भी विकासिक संबंध करने लगी। ततांर-वामीरी की त्यागभयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

प्र४) निकोबार के लोग ततांर को क्यों पसंद करते थे?

उत्तर ततांर काफी सुंदर और शक्तिशाली पुरुष था। वह काफी नीक और महान्‌गार था। वह हमेशा सेवा के लिए तत्पर रहता। वह सिर्फ अपने गांव की ही नहीं बल्कि सारे द्वीपवासियों की भूमि करता था। उन भी कोई सुसिवत ने उसका समर्पण करता, तो वह आग-आगा रहा। पहुँच जाता। इन कारणों के कारण वह निकोबार का हुनरा था।

प्र९) निकोबार के विभक्त द्वीने के नाम में निकोबारियाँ का क्या विश्वास नहीं?

उत्तर वह भानते हैं कि ततांर के उपरे क्रोध के शमन ये निकोबार को विभक्त कर दिया।

प्रा०) ततांरा के परिजन के बाहु कहाँ गया? उस जगत्  
का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर ततांरा के परिजन के बाहु समृद्ध किनारे ठहलवे  
गया। सूरज उस वक्त दूबने वाला था। समृद्ध से  
ठंडी हवाएँ आ रही थीं। पहियों की शाम की चहचहाएँ  
शब्द: शब्द: हीण हो रही थी। उसका बहु शांत घन से  
समृद्ध के बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रुग्म  
विरंगी किरणें निहार रहा था।

प्रा०) वायीरो से मिलने के बाहु ततांरा के जीवन में क्या  
पविवर्तन आया?

उत्तर ततांरा वायीरो से मिलने के बाहु अचंचित और  
रोमांचित हो उठा। यह उसके गंभीर और शांत जीवन  
की बातों अकेली प्रतीक्षा थी। वह अब वायीरो को  
जीले होकरा मिलने से तप्त था।

प्रा०) प्राचीन काल से मनोरंजन और शक्ति प्रदान के लिए  
किस प्रकार के आयोजन किये जाते थे?

उत्तर प्राचीन काल से पश्च-पर्व का आयोजन ही नहीं था,  
यहाँ दृष्टि-पश्चुओं की प्रदानकी के अतिरिक्त  
पश्चुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा और दूरी। यह वर्ष  
में एक बार होता और यह सभी गाँवों के लोग इसमें  
हिस्सा लेते। बाहु ये नृत्य-संगीत और भोजन का  
भी आयोजन ही नहीं। फिर धीरे-धीरे और अलग-अलग  
तरह के कार्यक्रम शुरू होते।

प्रा०) कटियाँ जब बंधन बन बौद्ध बनने लगे तब उनका दूर  
जाना नी अच्छा नहीं क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कटियाँ जब बंधन और बौद्ध बनने लगे तो उनका दूर  
जाना नी अच्छा नहीं क्योंकि यह कटियाँ हमारे पूर्वों

तो हमारी विकास के लिए बनाई थी, परंतु जब पढ़ी जटियाँ हमारा नाश करने लगे तो इनका दूट जाना नी अच्छा रहा तो से प्रस्तुत पाठ में पासा और लपाती गाँव की पुरानी परंपरा के कारण प्रभी - युगलों की अपना बलिहार करना पड़ा और अंत में उनकी झुल्ले दो जाति ने तो से जी जी का दूटना नी उन्हें ने भुष्य से उसका नीवन अधिकार नी हीन लेती नहीं

प्राप्त) आशय स्पष्ट करें-

क) जब कोई राज ने सूझी तो क्रोध का व्यायन करने के लिए उसने शामि भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत ये उसे छीनने लगा।

ब) बस आस की मुक किरण थी जो समुद्र की दौड़ पर इनकी किरणों की तरह कभी भी दूब जाती थी।

उत्तर क) तताँस अपमान से बीमा क्रोधित हो गया और अपनी तलवार पूरी ताकत से धरती में घोंप दी। उसे छीनने पर धरती हो दिसायी गए बैठ गई।

ब) तताँस वामीरों के प्रेम में दूब चुका था और उसकी प्रतीक्षा में द्याशा - निराशा के बीच झूल रहा था। उसे उस पासी कहीं वामीरों न आई, और उसकी परं इकानाव आशा भी दूबते स्थिर की किरणों - सी दूब न जाए।

प्राप्त) वाम्प का प्रकार बताएं-

क) निकोनारी उसे बैठक प्रेम करते थे।

उत्तर विद्यानवाचक

ब) दुमने दुकासक इतना मधुर गाना उष्णरा क्यों छोड़ दिया?

उत्तर प्रश्नवाचक

उत्तर ग) वार्षिकी की गाँव कोट में उपन उठी।  
विधानवाचक

उत्तर घ) क्या तुम्हे गाँव का नियम नहीं मालूम?

उत्तर उ.) वार्षिकी किसना सुन्दर नाम है।  
विस्मयादि वाचक

उत्तर च) वे तुकड़ा रस्ता छोड़ दूँगा।  
विधानवाचक

प्र 17) मुहावरे का अपने वार्षिकी में प्रयोग करें-  
क) सुध-बुध छीना (मौश छीना)  
वार्षिकी को दूषिकर ततोरा ने सुध-बुध छोड़ी।

छ) बाट जीना (राह दूखना)  
ततोरा शाम तक वार्षिकी की बाट जोड़ता रहा।

ग) छुशी का ठिकाना न रहना (बहुत छुशा होना)  
वार्षिकी को दूषिकर ततोरा की छुशी का ठिकाना न रहा।

घ) आग बढ़ला होना (गुस्सा होना)  
वार्षिकी की माँ आग बढ़ला हो उठी।

उ.) आवाज उठाना (विरोध करना)  
लोग ततोरा के खिलाफ आवाज उठाने लगे।

प्र०) गूल शब्द और प्रत्यय अलग को -  
उत्तर गूल शब्द प्रत्यय

वनित	चर्ची	रुत
सानसिक	सानस	रुकं
हृषीपटाठी	हृषीपटाना	आठठ
शब्दठीन	शब्द	ठीन

प्र०) उपसर्व लगाकर शब्द बनाए -  
उत्तर अना + आकर्षक = अनाकर्षक  
अ + नात = अनात  
स + कीमत = सुकीमल  
वे + हीश = वैहीश  
हुर + घटना = हुर्घटना

प्र०) वाक्य नियंत्रण को -  
क) जीवन में पहली बार ये इस तरह विभिन्न हैं।  
उत्तर जीवन में पहली बार नहीं कि ये इस तरह विभिन्न हैं।

घ) फिर तैज कहयों से चलती हुई ततांरा के साथ ने याकर छिठक गई।  
उत्तर ततांरा तैज कहयों से चलती हुई आई और फिर छिठक गई।

ग) वामीरों कुदू सचेत हुई और घर की तरफ छोड़ी।  
उत्तर वामीरों कुदू सर्हन रोकर घर की तरफ छोड़ी।

घ) ततांरा को दैखकर वह फूटकर रोने लगी।  
उत्तर उसने ततांरा को हैछा और रोने लगी।

ज) गीत के अनुसार दूरी को एक ही गाँव के रोना जरूरी था।  
उत्तर गाँव के अनुसार दूरी को इसलिए एक ही गाँव का रोना जरूरी नहीं।

प्र२१) विलोम शब्द लिखें-

- i) भय - निर्भय
- ii) मधुर - कड़का
- iii) सभ्य - असभ्य
- iv) श्वक - पाताल
- v) तरल - ठोस
- vi) उपस्थिति - अनुउपस्थिति
- vii) सुख - दुःख

प्र२२) पर्याप्तवाची शब्द लिखें-

- i) संसुद - सागर, जलधि
- ii) आँख - नेत्र, नपन
- iii) छिन - बार, छिक्स
- iv) अँचोरा - तम, अधकार
- v) मुक्त - मोक्ष, उत्ताप

प्र२३) शब्द का वाक्य में प्रयोग करें-

i) किर्तविन्यास-

आचानक आई समस्या ने युझे किर्तविन्यास कर दिया।

ii) विहळ-

वह अपने प्रैल डोने की बार सुन विहळ डो गई।

iii) अपाकूल-

गाढ़ की ओर सुनकर पूरा गांव अपाकूल डो गई।

iv) पाचक-

भिखारी सड़क पर पाचक बना छड़ा रहा।

v) आकृ-

र्ता आकृ भाना भार से गया।

प्र२४) किसी तरह औंचरित मुक ठड़ा और उबाज दिन बीत गए।  
वाक्य में दिन के लिए किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर दिन शब्द के लिए उ और विशेषण सुझाइए।

उत्तर वाक्य में 'ठड़ा' और 'उबाज' हो विशेषण दिन के लिए  
प्रयोग हुए हैं। उ अन्य उपचुल तरीने वाले विशेषण :-

i.) सुडाना।

ii.) धक्का।

iii.) यस्ता।

प्र२५) 'कौलना' किया के विचल शब्द प्रयोग कराइए।

उत्तर

कौलना

उचारण करना

कूलना

पौलना

संकूलना

सुनाना

भर्करना

प्र२६) पठबंध के प्रकार बताइए-

क) उसकी कृत्यना में वह मुक अद्युत यात्री युक्त हो। - विशेषण

ख) ततोंग की मानी कुटु त्रौश आया। - क्रिया

ग) वह भागा-भागा कहाँ पढँच जाता। - क्रिया विशेषण

घ) ततोंग की तलवार मुक विलक्षण रूप स्थ थी। - विशेषण

ङ) उसकी व्याकुल आखे वायीरो हूँ रठी थी। - विशेषण

पा०-१

# हीरा की

- विष्णुवर

प्र०) कथावाचक और डरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर कथावाचक (लैबक) और डरिहर काका के बीच आलीय और मधुर संबंध होयह इस कारण है क्योंकि डरिहर काका उनके पर्सी है, लैबक को बचपन से खूब प्यार करते हैं और उसे बेलाता है, उनसे ही लैबक की पहली होस्ती हुई, तथा वे लैबक से छुलकर बात करते हैं।

प्र०) डरिहर काका को महत और शाफ़ एक ही भौंगी के क्यों लग रहे हैं?

उत्तर काका को होने एक ही भौंगी के स्वाधीन लगे क्योंकि होने ही उनकी प्रायीन पाना चाहते हैं परन्तु होने से प्यार से उन्हें मीठी वाणी के साथ मनाने की कोशिश की, फिर जब काका नहीं माने तो होने ने काका के साथ जबरदस्ती की। इसलिए वह होने उड़े एक ही भौंगी के लगे।

प्र०) गङ्गुरबारी के प्रति गाँव वालों की कौन सी मनोवृत्ति उनकी लज्जा से झलकती है?

उत्तर इससे गाँव वालों की धार्मिक आन्दोलन, परंपरा से विश्वास और संघर्षकी की मनोवृत्ति झलकती है। वे ईश्वर और भगवान के नाम पर जब कुछ स्वीकार कर लैते हैं, चाहे वह अन्याय ही क्यों न हो।

प्र५) अनपढ़ लैकर वी दिनहर काका की समझ बैठती  
क्यों थी?

उत्तर दिनहर काका अनपढ़ रहे थे लैकिन शब्दारुक्त शब्द  
थे। उन्होंने महंत और अपने भाईयों की चालाकी  
और लालच की जाली पहचान लिया। ग्रीवन  
अनुभव से उनकी शोच गहरी झोंग निर्णय स्पष्ट  
थी। पर इस बात से पता चलता है कि रघेसर की  
विद्यवा, जो अपने जीते जी अपनी जापहार किसी और  
के नाम लगावाकर, ढाने-ढाने की घटाईताज दूर  
गई थी, से सीख लैकर समझ गए थे कि वह  
जीते जी अपनी प्रभीन किसी को न देंगे।

प्र५) दिनहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले  
कौन थे? उन्होंने उनके साथ क्या किया?  
उत्तर उनको उठा ले जाने वाले लोग ठाकुरबाड़ी के  
साथ-संत थे। उन्होंने महंत के कहने पर प्रसा  
किया था। वह काका को उठाकर ठाकुरबाड़ी ले गए  
और जबरन उनसे उनकी प्रभीन लिखवाने की कोशिश  
की, उन्होंने भारा और उराया-धमकाया, उन्होंने उनके  
अंगठे का जबरन निशान लगावाकर, उन्होंने अबाज वाले  
कमरे में बाँधकर, चुंड में कपड़ा ढैकर बंद कर दिया।

प्र६) दिनहर काका के व्याख्ये में गाँववानों की क्या जाए थी?  
उत्तर काका के व्याख्ये में गाँव दूरी और वर्गीकरण में बहुत  
गपाए एक वर्ग कह रहा था कि उन्हें अपनी प्रभीन  
ठाकुरबाड़ी के नाम लगावा देनी चाहिए। वह ऐसा इसलिए  
कह रहे थे, ताकि ठाकुरबाड़ी से उन्हें अच्छा-अच्छा  
प्रसाद के रूप में शीजन मिले। दूसरा वर्ग भाईयों के  
पास में या क्योंकि उनके बर ये थी दिनहर काका  
इसे लोग थे।

प्र०) थाट के ऊपर घर स्थल को किसे लेखक ने कहा है ?  
उत्तर कहा है - "ज्ञान की स्थिति में ही यत्पूर्ण युत्तु  
से उत्तर है। ज्ञान द्वारे के बाहर तो आपसी  
आवश्यकता पड़ने पर युत्तु को बरण करने के लिए  
व्यारोधी जाता है।"

उत्तर लेखक जानते हैं कि जी लीग युत्तु से उत्तर है,  
वे उसके रूपमें को नहीं समझते। ज्ञान द्वारे पर  
युत्तु एक स्वाभाविक प्रक्रिया लगती है, इसमें भी  
नहीं लगता।

प्र०) सभार ये दिशों की क्या अद्वितीयता है ?

उत्तर आजकल दिशों में भावनाओं की जगह स्वार्थ ने नहीं है। कहानी में श्री इरिन्द्र की जगह पानी के लिए दिशें हाथों ने घोबा दिया था। पुलिस न पहुँचती तो वे इरिन्द्र काका की जान लै लेते। आजकल सब कुछ जाधार ही है, जैसे कहानी में इरिन्द्र काका की जगह के फिटे उनके आई पड़े थे। उन्हें इरिन्द्र काका में कोई सतलान न था। असली दिशों आज बचे ही नहीं हैं। नये धन की बजाय दिशों के बाने चाहिए क्योंकि युशकिल में वही तथाएँ काम आते हैं।

प्र०) यही इरिन्द्र काका की दातत ऐ की है, तो आप उसे क्या सलाह द्योगों ?

उत्तर नम् उन्हें यह सलाह द्यें:-

- उन्हें जगह बेचकर, तो कर रख रहने की सलाह दें।
- उन्हें वृद्धालूम ऐ आराम से रहने की सलाह दें।
- उन्हें बिड़िया का सहारा लेने की कहते।
- उन्हें पुलिस कार्यवाही की सलाह दें।
- उन्हें कहते ही वह सिफ़ी अपने बाहर में रहें।

प्रा०) संगर दिनर काका के गाँव में बित्तिया की पुँछ लगी  
तो क्या होता ?  
उत्तर) उगर देसा होता तो इससे दिनर काका का भला  
ही होता। बित्तिया प्रह्लंत और घाईयों के कारनामे  
दूश और वे उछाती। इससे जब उच्च उत्थिकारियों  
की दिनर काका की कठाली पता चलती तो  
वह प्रह्लंत और घाईयों पर कार्यवाली करते। इससे  
प्रह्लंत और घाईयों को छुलिया का डर होता।  
इससे वह दिनर काका के साथ जबरदस्ती न  
करते।

प्रा०) लैखक हरिहर काका की अपने पिता की माँति प्रेम  
करता था, लैखक इतने अत्याचार होने के बावजूद वह  
हरिहर काका की घर क्षेत्र नहीं ले गए?  
उत्तर) लैखक ने देसा इसलिए नहीं किया क्योंकि हरिहर  
काका और लैखक की माँ होने तो विद्युत और  
विद्युत थी। अगर लैखक उन्हें अपने घर ले जाता  
तो गाँव के लोगों तरह - तरह की बातें करते,  
उसकी माँ के चत्र पर सवाल उठाते क्योंकि उस  
समय के लोगों की साँच तो देखी थी।

प्रा०) पाठ हरिहर काका से आपको क्या सीख मिली ?  
उत्तर) पाठ हरिहर काका से हमें ~~ज्ञान~~ पढ़ सीख मिलती  
है कि जायदाद से ज्यादा परिवार नहीं है।  
जायदाद से ज्यादा दिने काम आते हैं। दूसरी  
सीख हमें वह मिलती है कि जीते जी रुखे  
अपनी जायदाद किसी के नाम नहीं करनी चाहिए।  
तीसरी सीख यह है कि हमें नित सांचे समझे  
किसी भी संस्था को नहीं मानना चाहिए।

प्र १३) गीता ने कहा गया है कि अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला ज्याहा टोषी दौताहा है। इनिहर काका नमीन बेचकर छुच्छी भीवन आनंद का सकते थे, परं भी वह शार्दूलों के अत्याचार सहने रहे। क्या आप इनिहर काका इसके लिए सब जिम्मेहार हैं? अगर नहीं तो तर्क दूँकर सिद्ध करें।

उत्तर यह तो सब है कि अत्याचार सहने वाला ज्याहा नहीं दौताहा है, परं इनिहर काका की स्थिति ये यह नहीं है। इनिहर काका टोषी नहीं है। वे जबरत से ज्याहा शोले और उसे अद्दे हैं। वह महंत जी के प्रति लाधूप परं इसलिए उनके ऊपर की कार्यवाती नहीं है। वह नमीन शार्दूलों की नी दैना घोलो घोलो घोलो समझते थे। इसलिए काका ये ज्याहा टोषी अद्दंत वह शार्दूलों

प्र १४) क्या ठाकुरबाई की मंदिर कमेटी महंतो को ठग व लालची बनाने के लिए जिम्मेहार है या नहीं? उत्तर हैं, कमेटी ही महंतो को ठग व लालची बनाने के लिए जिम्मेहार थी। कमेटी हर तीन साल बाद महंत बदलती थी। इस तीन साल के बीच ये महंत लोग यह कोशिश करते हैं कि वह ज्याहा ये ज्याहा अपना प्रधार कमेटी पर गाल पकड़ते हैं। ताकि कमेटी तीन साल बाद उन्हें पहुँच न हो। इसके लिए वह ज्याहा ये ज्याहा चाहता है कि वह करने की कोशिश करते जैसे महंत ने इनिहर काका के १५ बीघे पर नज़र रखी थी। वह इस कार्यपाली के लिए लालची व ठग बन जाता। कमेटी को महंत हृसंग व्यक्ति को बनाना चाहिए या नो सब ये अनगवासे नहीं हैं और वहों का नाम रखता है।

प्र० १५) नरिन्दर काका की स्थिति की बतलना लेखक ने किससे  
की दृश्य ?  
उत्तर लेखक ने नरिन्दर काका की बतलना बँझधार ये प्रश्नी  
उस नाव से की थी, जिस पर वहाँ सवार चिल्ला कर  
वही उपर्युक्त जान की रक्षा नहीं कर सकते।

प्र० १६) लेखक ने अपने गाँव के बारे में क्या बताया है ?  
उत्तर लेखक का गाँव आरा करखे ये चालीस किलोमीटर दूर  
है। आबादी २५००-३०००+ है, तीन प्रमुख स्थान हैं। पश्चिम  
में बड़ा-सा तालाब, पश्य ये नदी गढ़ का पुराना वृक्ष-  
झाँसी पूरक ये स्थित ठाकुरबाड़ी।

प्र० १७) लेखक ने कौसे जाना कि नरिन्दर काका उसे बचपन में  
प्यार करते थे ?  
उत्तर लेखक को उसकी माँ ने बताया था, कि नरिन्दर काका  
उससे बहुत प्रेम करते थे और उसे कहे पर उठाकर  
धूमाते थे।

प्र० १८) नरिन्दर काका की संतान और पलियों के बारे में लिखो ?  
उत्तर नरिन्दर काका की उपर्युक्त से कोई संतान न  
थी, उन्होंने ही शाहियाँ की थीं। दो ही लोगों द्वारा  
पलियों उसकान्तर्व्य तुम्हे को प्राप्त हो गई।

प्र० १९) नरिन्दर काका गुस्सा कब ढूँढ़े ?  
उत्तर जब उनके अतीत के हीला इके जाने पर कई  
पकवान बने, पर उन्होंने फिर शी जबा-जुबा छाला  
मिला तब वह कोणित ही उठा। उन्होंने थली उठाकर  
फेंक दी।

# सूचना लेखन

क. छ.ग विद्यालय, मेरठ

सूचना

नेत्र चिकित्सा कंप का आपोजन

टिकांक:- 17-04-2025

सभी को सूचित किया जाता है कि रमाइ विद्यालय में  
नेत्र चिकित्सा कंप टिकांक २५-५-२५ को ग्रंगलवार के  
दिन सुबह १:३० बजे से शाम ५ बजे तक विद्यालय ~~के~~  
प्रार्थना सभा गैंडान में अनुभवी चिकित्सकों द्वारा  
संचालित किया जाएगा। अधिकारी अधिकारी साहू  
आमंत्रित हैं। अधिक जानकारी के लिए अध्योपस्थानी  
को संपर्क करें।

गतिवीधि अधिकारी

## अतिरिक्त प्रश्न उत्तर

प्रश्न हरिहर काका की संपति को लैकर समाज क्या दर्शाता है?  
 उपर विचार किएं।

उल्लिखित वर्तन काका की संपति को लैकर समाज काफी बात में ही वर्ग में गाँव बैठ गया। हीनों की वर्ग स्वार्थ के लिए ही हरिहर काका की सलाह ही लगी। एक वर्ग यह चाहता था कि उनकी संपति ठाकुरबाड़ी की मिले, तांड़ी वह वहाँ रहे। अच्छा भौजन प्रसाद के नाम पर वा सकें। हुसरा वर्ग इसलिए हरिहर काका की जमीन आई थीं की ही दैना चाहता था क्योंकि उनके वहाँ थी हरिहर काका नहीं थे। वहाँ वह हरिहर काका का उभचिंतक होता तो उसे उपनी जमीन, उपनी पास रक्षण की सलाह होता। इससे हरिहर काका का शेष जीवन सुख में बीतता।

प्रश्न) आपके अनुसार क्या भद्रत जी का हरिहर काका पर धर्म के नाम पर हकावत बनाना उचित था?  
 उल्लिखित नहीं, नपारे अनुसार यह सही नहीं, लेकिं गलत था भद्रत जी पर सब ठाकुरबाड़ी या धर्म या भगवान के लिए नहीं कर कर सही थे। कह तो चाहते थे कि कर कर्तव्यी के सामने अपनी भद्रता का सम्बन्ध तो उसी जीवन और भद्रत के पर भाट करें। यहीं वह पर सब निपी स्वार्थ के लिए नहीं करते, वह सब यों भगवान

के लिए करते हैं। भी यह गलत ही होता, क्योंकि कोई त्रिता चाहे उतना अपनी इच्छा। अब सारा मान कर सकता है, पर द्विष्ट धर्म के लाय पर द्विकाव ननाकर किसी की ज़मीन लेना गलत है, क्योंकि अगवान के पास सब कुट है, वह बात पर निश्चिर नहीं है। उससे हरिहर काका तुर्से होनी की भी दुख्ती नीवन बीताना पड़ेगा।

प्र३) हरिहर काका का अकेले पन और असुरजा क्या आज बुद्धगी में एक सचाई है?

उत्तर हाँ, यह बात तो सत्य है कि आजकल बुद्धगी में अकेलोपन और असुरजा काफी ज़्यादा है जैसे अब हरिहर काका अकेले रहते हैं, वैसे ही आज असच्च बुद्धगी अकेले व परिवार, दोस्तों से हूर रहते हैं। इसके कई कारण हैं, जैसे कभी शुद्ध विद्युश नहीं होते हैं, पर माँ-बाप को यहीं होड़ देते हैं। कई लोग बुद्धगी की घर से बोझ समझ निकाल देते हैं। हासरी और आज बुद्धगी असुरजी की है। कभी उम्र मारते पीटते हैं। घर में कई रुषत है या पिर निकाल देते हैं। इन सब चीजों को बत्त करने के लिए सामाजिक नोट लेंगा। सरकार को ऐसे लोगों पर लालू कहन्य उठाने वालिए। बुद्धगी की भी तरकर नहीं रहना चाहिए, वह तो अपनी आनन्द में प्रेम करने के कारण सब सद होते हैं।

प्र० गुरिन्दर काका का अपनी जन्मीन पर अंतिम समय अधिकार बनाए रखना उनका स्वाधीन हा था तुहारे ?  
उल्लेख गुरिन्दर काका का अंतिम समय तक अपनी जन्मीन पर अंतिम समय तक अधिकार बनाए रखना हुआ  
यांसे अंतिम समय तक अधिकार बनाए रखना हुआ यांसे अंतिम समय तक अधिकार बनाए रखना हुआ  
यांसे अपनी जन्मीन पर अपना अधिकार रखना चाहते थे, पर उनका स्वाधीन हा नहीं उन्होंने किसी की भी बात न की, यह उनका रह था।

प्र० यह आप गुरिन्दर काका की जगह है तो सचाइ यांसे परिवार का क्या साधना करते ?  
उल्लेख इस निष्पत्तिवित विनीयों में से कौन करते :-  
 i) जन्मीन बैंधकर किसी ऊंचे से घर यों नौकर रखकर रहते। नौकर को मोटी तनखाना है तो यांसे उसके साथ परिवार को भी साथ रहते। इससे उसके बच्चों से हमारा अकेलापन हुआ तो जाता।  
 ii) आधी जन्मीन बैंधकर वर्लिंग हुआ पै जाते, बाहर में आकार रॉबर यों शार्फियों के साथ रहते, यांसे उन्हें वामकी हैं कि यह उन्होंने हमारी सेवा न की तो जाकी आधी जन्मीन यों बैंध दूँगी।  
 iii) जन्मीन न बैंधकर उस पर कोई व्यवसाय करते यांसे मुनाफ़े से शहर या होटल में छुड़ा रिवान बताते करते।  
 iv) जन्मीन पर छेती के लिए नौकर रुक्ति उन सबको बतनखाना है तो यांसे मुनाफ़े से गाँव यों कुकु बड़ा सा घर बनाकर शान से रहते।  
 v) सारी जन्मीन ठैके या किराये पर हैं कर, किराये के पस्तों से घर यांसे गाड़ी छरीठ प्रति से रहते।

# पाठ-१ संचयन

Page No. 34  
Date : ३१/८/२०२५

संचयन की शब्दों का लिखना - गुरुत्रयाल सिंह

Para-1

- प्र१) क्या बच्चे आज भी नग पाँव, कटे पुराने कपड़े पहनकर गाँव/गली में घूमते व खेलते हैं?
- प्र२) क्या जब बच्चों की खेलते हुए चीट लग जाती है, तब इस कारण से उन्हें डॉटना पा सारना उमिया?
- प्र३) बच्चे वीटाई व खेलने से रोकने के बाबत किसे बिना किसी दिनकिचाट के खेलने चले जाते हैं। ऐसा बच्चे क्यों करते हैं?
- प्र४) क्या चीट लगने पर आजकल के याँ-आप भी बच्चे की डॉटते हैं?
- प्र५) लेखक जब बड़ा होकर ~~कौनी~~ बाल-भूमि विज्ञान पढ़ता है तब उसे पता चलता है कि बच्चे डॉट के बाद भी क्यों खेलने चले जाते हैं। क्या आपके साथ भी ऐसा हुआ है कि जब बचपन में आपको रोका गया हो तब आप उसे बैकार समझते हो, पर सभ्यता के साथ आपको पता चला हो कि आप वैसा क्यों करते हो?

Para-2

- प्र१) जैसे कहानी में बच्चे बस्ता फैक आते हैं, क्या वह बस्ता तात्वाव ये फैकना उचित है?
- प्र२) क्या बच्चों का पटाई ये सभि न लैता उनकी गलती थी, या भाता-पिता की?
- प्र३) दूसरे इसी क्या तरसीलहार लगवाना है - इस कथन से सामाज की कौनसी सभ शलकती है?
- प्र४) क्या स्कूल ~~छोड़कर~~ हुकानहारी सीखना नंबे सभ्यता ये बच्चों के लिए लाभदायक है या हानिकारक?
- प्र५) क्या यह उचित था कि भाता-पिता ने जैसे बच्चों की स्कूल छोड़ने दिया, बिना उन्हें सभ्यता का प्रयास किया?
- इसे आज के संदर्भ में लूलना क्यों?

- प्र० ३ क्या बच्चों को उक्त दृश्यों की आवा पर रुसका सही था, या  
यह अंद्रभाव को बढ़ावा देता है?
- प्र० ४ पाठ में बच्चे छैलते हुए उक्त दृश्यों की आवा नहीं जाती।  
क्योंकि यह बच्चों में आण के मतहमें से उपर  
उठकर उक्त - दृश्यों की समझने की जगह नहीं देते?
- प्र० ५ छैलने के दिन चार बचपन में गली बीतने के पीछे  
सामाजिकी की क्या अवधिकार है? इसके कारण क्या है?
- प्र० ६ बच्चों की योंच थी कि स्कूल 'कह' है। यह किसकी  
विफलता है - बच्चों की या शिक्षा की?
- प्र० ७ आज वह संस्कृति के अलग रोने के बाहर भी बच्चों  
में दौलती रोना क्या सीखता है?
- प्र० ८ यह बच्चों द्वारा क्या उक्त ये काम करना सही था है?
- ✓ इससे उनका बचपन तो नहीं होना जाता?
- प्र० ९ क्या बचपन की मासूम हड्डियाँ, तेज़ी से फूल लेकर बालत  
हैं या ऐसी खोनी हटाओ जो का दिस्या है?
- प्र० १० उड़ियों और उनके पूँछों की छुश्क आव भी गड़सूस  
रोना - क्या यह पाठों की ताकत और गहराई  
को दर्शाता है?
- प्र० ११ क्या यह सही या कि बच्चे अगली कदमों में भी उपरे  
पुराने भास्तरों से उत्तरे हैं? शिक्षा प्रणाली इस उत्तर  
को कस दूर कर सकती है?
- प्र० १२ बचपन में कदम/इंटरव्हियों की बजाय उस का कारण  
बनती थी - क्या ये शिक्षा की असफलता नहीं है?
- प्र० १३ क्या नानी का बच्चों के बीलचाल और खानपान से  
बुश रोना, पीड़ियों की बीच के फर्क को दर्शाता
- प्र० १४ बिना तीरना जाने गहरे पानी में जाना साइरस ने या  
नो छिपा? क्या आपके बच्चों में पह साइरस है?

- प्र०३३) भैंस की वृद्धि पकड़कर बाहर आना - यह क्यों के तुगार और टीसी की विसाल कल्पना है? क्या ऐसे जीविय और तुगार लगाने सड़ी है? वह ऐसे शींग पकड़ने पर गुस्से भें शींग घार थी तो लकड़ी की?
- प्र०३४) क्या दुष्टियों की धारे क्यों के मानसिक और भावनात्मक विकास की अभिका निभाती है?
- प्र०३५) क्या आज के क्षेत्र भी दुष्टियों विनाश है? या यह अब संश्वर नहीं है?

~~प्र०३६)~~ ~~दुष्टियों~~ का उर के साथ कल्पना, क्षेत्र की किस मानसिकता को दृश्यता है? इसके स्थानांश हैं?

प्र०३७) पश्चाई की कजाय पिटई की येस्ता सोहा मान नेता यह क्षेत्र की सौन वें उर ए नोने का उदाहरण है या गलत है? क्या यह उनकी बाहाहुरता की दृश्यता है?

प्र०३८) ओमा ईसा नेता नोना क्या क्षेत्र के समुद्र में सौन और शक्ति का प्रतीक है? अपने विचार हैं?

प्र०३९) क्या हौमवर्क क्षेत्र की स्वतंत्रता छीन लेता है?

~~प्र०४०)~~ 'रेल-बच्चा' ईसे नामकरण क्या क्षेत्र की कल्पना शक्ति है या उर?

प्र०४१) 'विल्ली' के क्षेत्र के माध्य पर तरबूज, नीसी तुनना क्या क्षेत्रपन की निरीणण मूल्यता और इस्थिरता को द्विखाती है?

# अभ्यास प्र०

Page No. 37  
Date: 21/4/2025

प्र० कोई भी भाषा आपसी अवहार से बाला नहीं बनती वाट के किस अंदा से सिद्ध होता है?

उत्तर यह पाठ के उस अंदा से वहा जलता है जिसमें लैखक अपने राजस्थानी और राजपाणी मिश्री के बारे में बताता है।

प्र० फीटी साहब की 'शाकाश' पर्स के तमगों सी ब्यों लगती थी? उत्तर फीटी साहब कठीर और सच्चा स्वभाव के थों बचों को उनसे शाकाशी बिलबा बड़ी उपलब्धि तराती थी, इसलिए उन्हें लगता था कि वह उनके लिए पाँत का तमगा नहीं।

प्र० नफी छोटी बालों और किताबों की गंद ऐ लैखक का मन उदास क्यों नहीं जाता था?

उत्तर लैखक इसलिए उदास हो जाता था क्योंकि लैखक के मन ऐ नप दूजों की बुरिकल पढ़ाई और घासरों की भार-पीट का तोर नह गया था।

प्र० स्काउट पर्स करते यमय लैखक छुट के मरत्व पर्स कौनी थीं बानता था?

उत्तर मास्टर प्रीतमन्द जब पर्स करते थे तब उन फौजियों के जैसे किसल था लैफट-राइट छोटे हुए मार्फ करते थे। फिर बचों भी छोटे वे अकड़कर चलते। यह सब फौजियों की तरह होता। इससे लैखक छुट के पाँती की तरह मरत्व पर्स बानता।

प्र० ट्रेडमास्टर ने फीटी मास्टर को उस लल क्यों किया?

उत्तर फीटी साहब ने छुटों की बैरामी से मुग्गी बनाकर सज्जा दी थी। बचों दोथी कहा ऐ पढ़ते थे और छोटे थे। इस पर ट्रेडमास्टर ने गुस्सा हो गई और उन्हें निकाल दिया।

प्र०) लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल छुड़ी से यारी जाने की जगह न लगाने पर भी कब और क्यों?

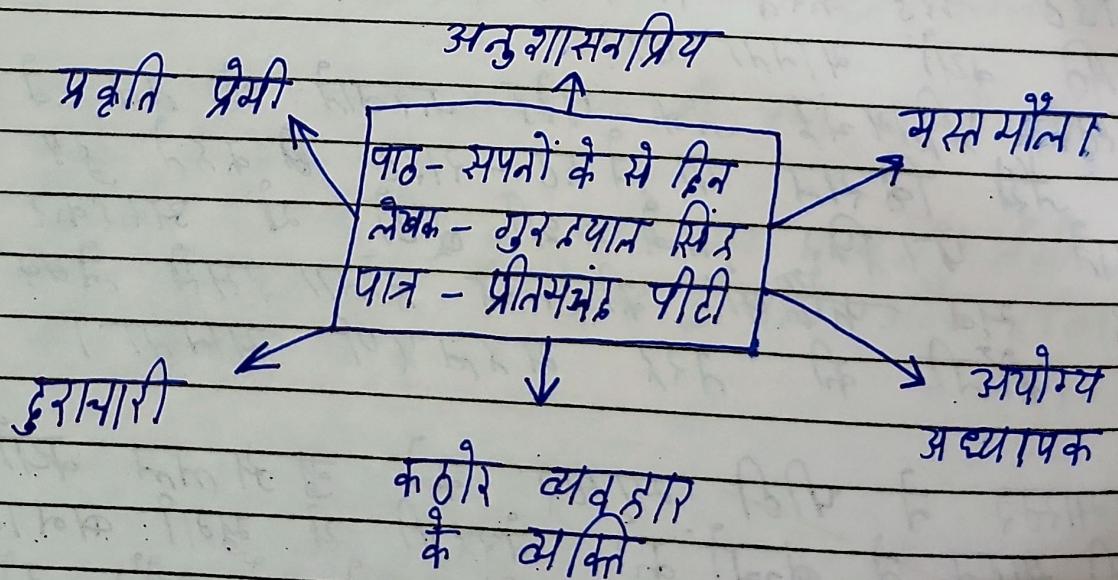
उत्तर जब पीढ़ी सदृश स्काउटिंग करती थी, तब उन्हीं

एवं स्काउटिंग के बाएँ बच्चों की घाँटियाँ पकड़ते और गाँठ की जगह शाकाशी होती। इससे बच्चे काफी भुरा होते और स्कूल आकर्षण इस युष्म अनुभव को पाना चाहते।

प्र०) हुड़ियों का काम पूरा न करने पर छुट्टो को नियमी नहीं हुड़ि को बदाहुर बनाने की कल्पना करता?

उत्तर लेखक सारी हुड़ियों में काम करने की नहीं - नहीं की पर्जनाएँ बनाता। जब हुड़ियाँ बस्त्र होती और लेखक का काम पूरा न होता, तब वह ओमा की वरद बदाहुर बनना चाहता। ओमा काम करने की जगह भार लाना आसान चाहता था।

प्र०) पीढ़ी सर की चारित्विक विशेषताएँ बताएं।



प्रासर नीटी प्रेमचंद अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। ~~वह~~ वह उसी को ~~जी~~ पंक्ति में भीथा था। वह दैषता प्रगङ्क करते ही अगर कोई प्रेमा न करता था, तो वह उसकी चमत्री उद्धेष्ट होता था, वह अपने होनों तोनों को ल्यार करते व उन्हें बहाय देता था, इससे यह पता जाता है कि वह प्रकृति से खो वह असलमोला थे, जोकरी से उत्तम गोने फरया देखिकर रहते थे। वह दृश्याचारी व अधोग्र अध्यापक गोने तो बचों से ~~खुब~~ उपने घर का काय न करते और छोनों को कठोर सजा की बजाए ल्यार से समझाते। वह कठोर स्वभाव के थे।

(Q) यह में दिल्ली अनुशासन की उम्मियाँ और आजवीचुकियाँ में ज्ञात थिन्ता हैं?

उत्तर यहाँ अनुशासन के लिए यारपीट गोनी थी व वह अनुशासन ये रहते थे। आज शारिक सजा बरतते हैं, इसलिए बचों में अनुशासन की कमी दिखती है।

(Q) क्षेत्र आपके लिए क्यों जहरी है? प्रेसे कॉन-से नियम अपनायेंगे जिससे अधिकावकों को उपर्युक्त न होती है?

उत्तर छेत्र द्वये नियमिति नीति बरतती है-

- गारिक विकास
- भानसिक विकास
- करिपर संभव है
- सजा आता है।

नम्ब अपने अधिकावकों को अच्छे अंक प्राप्त कर छेत्र के लिए सजा सकते हैं। उनकी सिर्फ़ एक ही बहु गोनी है कि उन्होंने से पहाड़ बल्ल न हो जाए।

पार्ट - 3

# टीपी शुभमा

- रामी मासूम रहा

विचारात्मक प्रश्न -

- प्र१) अगर आप टीपी की जगह नहीं तो कैसी हिति में  
क्या करते?
- प्र२) क्या औरतों पर गैक-टीक करना उचित है?
- प्र३) वैसे तो इफ्फन की हाथी माँलवी जी की सभी  
बातें बाबकर, एक माँलवीन की तरह रहती थी,  
पर जब उनके बेटे को बैचक हुआ, तब वह  
सब थ्रेकर भाता की पूजा करती है और कहती  
है - "भाता माँ बच्चे को आप कहायो।" इससे क्या  
झुन्धा की कोई वयसी व्यास्किता का पता चलता है?  
एक माँ अपने बच्चे के लिए क्या-क्या कर सकती है?  
उसके लिए धर्म व सभाज ज़रूरी है या बच्चे?
- प्र४) क्या नामों और धर्मों का अंतर व्यक्ति की सोच और  
सामाजिक पहचान को प्रभावित करता है? अपने विचारों  
प्र५) धर्मों की परंपराओं के बीच व्यक्ति की असत्यता को  
पहचानने में क्या कठिनाई है हो सकती है?
- प्र६) क्या इफ्फन, और टीपी की हाथी इस बात का  
उदाहरण है कि व्यक्ति धर्मों से उपर उठकर सोच  
सकता है?
- प्र७) क्या "हिंदू - ख्यासलिम भार्द-भार्द" ऐसा नाम है  
जो गजनीतिक लोग इस तौर पर करते हैं या एक ऐसी  
भावना। इस पर नर संभव विचार है।
- प्र८) क्या भाषा व्यक्ति के मनोभावों को व्यक्त करने में सक्षम  
प्रत्यक्षपूर्ण भूमिका निभाती है? इफ्फन की हाथी के  
माध्यम से उदाहरण है।

- प्र०) क्या व्यक्ति की पहचान उसके कर्म और सोच से होती है ?  
या उसके नाम और विरासत ये ? इफन के व्यक्तित्व की  
ध्यान में रखते हुए समझाएँ।
- प्र०) क्या धर्म और परंपराएँ व्यक्ति की सोच को सीधा करती है ? या  
वे उसे एक नई दिशा देने में महायक रोली हैं ? होमी  
शुका के संदर्भ में विचार दें।
- प्र०) होमी और इफन की होस्टी क्या इस बात का प्रभाव  
है ? कि सामाजिक और धार्मिक विनाशक इन संबंधों में  
वाहा नहीं बनती ? विचार स्पष्ट करें।
- प्र०) इफन की दृष्टि के द्विष्टीकोण के वर्तमान समाज के  
संदर्भ में विचार दें।
- प्र०) होमी का शिक्षा में पिछड़ना क्या केवल उसकी व्यक्तिगत  
असफलता है, या यह समाज की बाधियों को उतारा  
करता है ?
- प्र०) भाषा और नामों की पहचान की जो पाठ ये बात की  
गई है, वह आज के डिजिटल युग में कैसे लागू होती  
है ?
- प्र०) क्या होमी की कहानी हमें प्रसिद्धता के व्यक्तिगत  
अनुभव सामाजिक समाईयों की समझने का माध्यम बन  
सकते हैं ?
- प्र०) क्या जैसी विचार होमी और इफन के बीच थी,  
वह आज के युग में संभव है ?
- प्र०) यहि पढ़ कहानी आज के समय में घटित होती, तो  
उसमें क्या बहलाव होते ? वर्तमान युग की स्थिति  
के अनुसार लिखें।
- प्र०) लेखक उस क्यों सोचता है कि मृत्यु के बात ही  
सबसे बड़ा संतान सपने हैं क्या यह सच है ?  
नहीं ? उपने विचार दें।

# अभ्यास प्र० १

प्र० १) इफन टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण तिस्ता क्या है?

उत्तर वह ऐसे महत्वपूर्ण तिस्ता है क्योंकि टोपी की पढ़ती होस्ती उसी से हुई थी। उनकी कहानी बिना इफन के अधूरी है, इसलिए इफन का दोबा कथा समझने के लिए जरूरी है।

प्र० २) इफन की दृष्टि अपने पीछे क्यों नहा चाहती थी?

उत्तर इसके २ कारण थे-

i) वह हड्डी, हृदय, अक्षन, घी छाना चाहती थी, पर मौलिक के घर में यह सब उन्हें नहीं बिल्मा पर उनका पीछर हिला था और वहाँ वह घर भव भक्ति थी।

ii) वह हड्डी शिति के अनुसार कही नहीं हुई थी, उसकी उन्हें नाच-गाना पसंद था। पर मौलिक के घर पर विवाहित थी, इसलिए वहाँ वह नाच-गा कही चाहती थी। पर पीछर में उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था।

प्र० ३) इफन की दृष्टि अपने घर की शाही में नाच-गाने क्यों न सकी?

उत्तर वह मौलिक घर में बचाई थी, उनकी शिति के अनुसार नाच-गाना गलत था। इसलिए वह अपनी इच्छा पूरी न कर सकी।

प्र० ४) अम्मी शब्द पर टोपी के पर में क्या प्रतीक्षिया हुई?

उत्तर टोपी के पर में 'अम्मी' शब्द शुनकर घर बढ़ जाएँगे के गए और गुस्सा हो गए, क्योंकि वह मुमलिम शब्द था और उसका परिवार कहर हिला था। शाही न उसे ठाँटा, याँ न भार और वह माई न एक छोड़ती शिकायत लगा ही।

प्र०) ~~प्र०~~ 10-10-1945 का दिन टोपी की प्रिंसिपली में क्या  
महत्व रखता है?

उल्लंघन इस दिन इफ्फन के अबू का नवाहला सुराहाबाद हो  
गया था, जिससे टोपी अकेला पड़ गया। वह कलैकटर  
के होस्टों ने उनकी नदी की। इस दिन टोपी ने कसब  
छाई की बद अब किसी प्रेस से भी से होस्टों का  
करेगा, जिसके पिता का नवाहला होता है।

प्र०) टोपी ने इफ्फन से हाथी बढ़ाने की बात क्यों की?  
उल्लंघन टोपी की हाथी कहुर और कठोर थी, जबकि इफ्फन  
की हाथी सूने रंग की और घारी थी। इसलिए वह हाथी  
बढ़ाना चाहता था।

प्र०) पूरे घर से इफ्फन को उपरी हाथी से दी विशेष प्रेम क्यों है?  
उल्लंघन पूरे परिवार से सिर्फ़ करी थी, तो उससे प्रेम करती  
थी और कभी न उटाती थी। वह उससे विशेष प्रेम करता  
था। परिवार के बाकी ~~सभी~~ सभी हाथी न कभी  
इफ्फन को उटाते हैं, या परेशान कर देते हैं।

प्र०) इफ्फन की हाथी के दृश्यांक के बारे टोपी को उसका  
पूरे खाली क्यों लगने लगा?

उल्लंघन सिर्फ़ हाथी दी पूरे घर से टोपी से ऊंचे सहित  
बूत करती थी। उनके दृश्यांक के बारे कोई और  
टोपी से प्रेम न करता था, इसलिए उसे हाथी के  
दृश्यांक के बारे पूरे खाली लगने लगा।

प्र०) टोपी का इफ्फन की हाथी ~~कहाँ~~ से अदृष्ट रिश्ता क्या है?  
उल्लंघन भजन और जाति से पूरे, ऊंचे और उपर्युक्त ने टोपी को  
इफ्फन की हाथी से जोड़ा। वह रिश्ता उल्लंघन से था, सामाज  
से नहीं। वह प्रेम हाथी और उसे बांधे था।

प्रा०) टोपी नवी कूला में ही बार फैल हुआ/बढ़ाया -

1. जनरिन टोने के बावजूद भी कूला में ही बार फैल रहा है क्या कारण है?

2. एक दी कूला में ही बार बढ़ने से टोपी को किन आवश्यक चुनौतियों का सम्भवा करना पड़ा?

3. टोपी की आवश्यकताक चुनौतियों को ध्यान में रखके हुए लिना अवस्था में नकरी बढ़ाव दें।

उत्तर 1. जनरिन टोने के बावजूद बहु फैल हुआ गया -

- पहले सम से यह नहीं था, वर बाले उभये अपने काम की करते रहे।
- हासरे सम उसे हाइफार्ड ने गया।

2. उसे यह चुनौतियों आई -

- बहु अकेना पड़ गया था।
- बहु शर्म भरसूस करने लगे।
- बहु द्विती की बात किसी से कहन सका।
- बहु इसी का पत्र बन गया।
- बहु मानसिक तरीर के परेशान हो गया। (उत्तर)

3. यह बढ़ाव किस तरीके सकते हैं -

- छात्रों को ही बार फैलन करना चाहिए, हासरी बार उसे पास कर देना चाहिए।
- विषय चुनाव की छात्रों को हृत लिनी चाहिए।
- छात्रों को अंक नहीं ग्रहण के आधार पर पास करना।
- फैल टोने को छात्रों को अपमानित नहीं करना है।

प्रा० अ. कृष्ण की हाई का पर कस्टोडियन ये क्यों कहा गया?

उत्तर 1947 के बढ़वार में उनके भायके कराची चले गए, वर लागायिल ही गया और सरकार ने घर को कस्टोडियन घोषित कर दिया।

# कविता - २

Page No. 45  
Date 25/4/2025

पृष्ठ

- शीराबाई

प्रश्न पहले पृष्ठ में शीरा ने हमि से अपनी लड़ा दूरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर शीरा ने हमि से अपनी लड़ा दूरने की विनती करते हुए दूरीपूरी, गजराज और प्रह्लाद के उदाहरण दिए हुए और उनसे अपनी दूरा करने की प्रार्थना की है।

प्रश्न दूसरी पृष्ठ में शीराबाई इथाम की चाकरी क्यों करना चाहती है?

उत्तर शीराबाई इथाम की चाकरी करना चाहती है क्योंकि वे श्रीकृष्ण को समर्पित हैं और उनकी यैवा करके दर्शन सुख प्राप्त करना चाहती है।

प्रश्न शीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-योग्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर शीरा ने श्रीकृष्ण के रूप-योग्य का वर्णन करते हुए उनके पीतांबर, मुकुट में भौंर पंछ और वैजयंती धारा पहने हुए बताया है, जो घट्ट-बालों संग गाय चराते हुए चुक्कली बता रहे हैं।

प्रश्न शीरा की भाषा शैली पर प्रकाश उत्तेजित है।

उत्तर शीरा की भाषा शैली में छंज, राजस्थानी आदि भाषाओं का प्रयोग है, जो सहज, यथुर और आवनाकृत है। उनकी भाषा में शात रस और प्रसाद गुण की प्रधानता है।

प्रश्न शीरा श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या करने की तैयार है?

उत्तर शीरा उनकी चाकरी, बाग लगाने और बुंदावन में उनकी लीलाओं का गुणगान करने को तैयार है।

## विचारात्मक प्रश्न-

प्र१) "भगत कारण कप बरहनि धरयों आप सरीरे" अगवान् ने अकत के लिए अवतार लिया। इसी आज के सामाजिक व्याप की कृष्णिकोण में कैसे समझा जा सकता है?

प्र२) हौंपडी की लाज और गजराज की रङ्ग तस्वीर छटनाया का बर्जन क्यों किया दूर? यह क्या दृश्यान्त है?

प्र३) "ठरो छारी थीर"- इस याचना में केवल विनाशता है या आत्मबल की भाँग भी हिस्सा है?

प्र४) क्या "अगवान् अकतों की रङ्ग करते हैं" बाली सोच केवल भक्ति पर आधारित है या कर्म पर यही? आज के समय में इसका क्या अर्थ विकल्प है?

प्र५) शीरा छुट को चाकर क्यों कहती है? क्या अन्ति में अकत का अगवान् ये दीन नोना जड़ती है?

प्र६) शीरा एक अकत थी। क्या वह इसी कारण छुट की दीन व चाकर कहती है? क्या सभी अकत ~~दीन दीक्षा~~ छुट की दीन समझते हैं? वाहन तस्वीरों का क्या रखा अकत बनकर चाकरी की पीड़ा की कालना करते हैं या उसका अन्दर नास्तिक नोना नहीं है?

# उत्तरी का एक पूँजी

- मीमांसा शैक्षणिक

प्र१) कलकला वासियों के लिए २६ जनवरी १९३१ का दिन क्या भवित्वपूर्ण था?

उत्तर कलकला वासियों के लिए २६ जनवरी १९३१ का दिन इसलिए भवित्वपूर्ण था क्योंकि २६ जनवरी १९३१ के दिन कलकला के लोगों ने उत्तर अंग्रेजों का सम्मान किया तथा दूसरे स्वतंत्रता दिवस के उत्साह के साथ मनाया था। इस दिन कलकला वासियों के माध्ये पर तो कलंक लगा था वर छुल गया था।

प्र२) मुश्खाष बाबू के जल्दी से क्या पर था?

उत्तर पूर्णदास

प्र३) विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर भृद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया और लोगों मारा था हटा दिया।

प्र४) लोग अपने - अपने घरों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत होना चाहते थे?

उत्तर लोग अपने घरों पर झंडा फहराकर यह संदेश होना चाहते थे कि वह भी आज्ञाह होना चाहते थे। वह अंग्रेजी शासन से मुक्ति चाहते थे। अब वह अंग्रेजी शासन के शुलाम नहीं होना चाहते। यह मुक्ति की ओर बढ़ता हुआ एक कहन्व था, जिसे औपन लड़ाई की सेता ही गई।

प्र०) पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मेहनानों को क्यों घेर लिया था?

उत्तर) पुलिस ने पार्क की इसनिष्ठा घेर रखा था, ताकि लोग एकत्र न हो सकें, सभा न कर सकें, वास्त्रीय इंजुरी न हो सकें। पुलिस लोगों को स्वतंत्र द्विवस मनाने से रोकना चाहती थी।

प्र०) २६ जनवरी १९३१ के दिन को अमर जनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

- उत्तर) २६ जनवरी १९३१ के लिए पहले कुछ किया गया:
- कलकत्ता के लोगों ने अपने-अपने घरों की छवि सजायाया।
  - मकानों पर राष्ट्रीय झंडा लगाया गया।
  - सभाओं का उपायोजन किया गया।
  - बाजार और शहरी स्थान सजाप गए।
  - स्वतंत्रता प्रतीकों की तैयारी की गई।

प्र०) आज नहीं बात थी कि निराली थी-विस बात से पता चलता है कि आज का दिन अपने आप में भिराला था?

उत्तर) आज का दिन (२६ जनवरी) अपने आप में निराला था क्योंकि कलकत्ता के लोग पूरे उत्साह के साथ स्वतंत्रता द्विवस यात्रगार बोलाने में जुटे थे, और कहीं सुरुआत की बाहु थी लोग त्रुत्खम् में भाग ले रहे थे और दैश-प्रेम का प्रदर्शन कर रहे थे।

प्र०) पुलिस क्यों झड़ और कोसिन के नोटिस में क्या अंतर था?

उत्तर) क्यिंतर के नोटिस में सभा पर प्रतिबंध था और आग लौंगे वालों की दौषिणी बताया था, जबकि कोसिन के नोटिस में स्वतंत्रता की प्रतीकों पर और इंटी प्रहराने के लिए सर्वसाधारण की उपस्थिति का आवंडान था।

प्र०) लर्निंग के मीड़ पर आकर तुलस क्यों दृट गया?  
उत्तर तुलस दृट गया क्योंकि पुलिस ने सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर लिया और आंदोलनकारियों पर लाठियों से वार किया, जिससे लोग घायल हो गए और तुलस फेंक गया।

प्र०) गुण्डागुण्डा तुलस ये घायल लोगों की छेष-रेष तो कर रहे थे, उनके फौटो भी उतार रहे थे क्यों?  
उत्तर इसके कई कारण हैं; जैसे-

- दैश को बताना की कलंकला के लोग भी हैं जो दैश को आजाह कराना चाहते हैं।
- पिछले साल का कलंक भिटाने के लिए।
- हुनिया को अंग्रेजी अत्याहार के बारे में बताने के लिए।
- स्वतंत्रता दिवस की यादें रखने के लिए।

प्र०) सुभाष बाबू के तुलस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?  
उत्तर स्त्रियों ने तुलस से याक्रिय घाग लिया, इंतरा लड़राया, पुलिस के अत्याहारों का सामना किया और सुभाष बाबू को आजाह कराने कीशिश की।

प्र०) तुलस के ललबाजार आने पर लोगों की क्या हशा हुई?  
उत्तर ललबाजार में पुलिस ने लाठियों से लोगों की घार, सुभाष बाबू और कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया। इस संघर्ष में कई घायल हुए।

प्र०) पाठ में कौन से कानून को अंग करने की बात कही गई है?  
उत्तर कानून किसने लगा दिया था? क्या कानून अंग करना उचित था?  
पुलिस कमिश्नर ने सभा पर प्रतिबंध लगाया था, तो किन

कार्यक्रम तो इसका उल्लंघन करते हुए सभा ज्ञापोनित की और ब्रह्मण्ड पहुँच गया। यह सब करना आजाही की तड़ाई के लिए जरूरी व उचित था।

- प्र१५) बहुत लोग घापल हुए, फिर श्री इस द्वितीय की अपूर्व क्षेत्रों कहा गया है? क्या आपके विचार में यह अपूर्व है?
- उत्तर २६ जनवरी १९३१ का दिन अद्युत या क्योंकि कलकत्ता के लोगों ने द्वैशभाकि, यकता और साहस का प्रदर्शन करते हुए स्वतंत्रता दिवस अनाधा और उल्लिखनी क्षेत्रों के बाबजूद अपने संकल्प को पूरा किया।

### विचारात्मक प्र१६-

- प्र१६) कलकत्ता वासियों ने तो ₹२००० रुपये किए बड़े उल्लंघन कहाँ-कहाँ छर्च किए हुए हैं?

- प्र१७) २६ जनवरी १९३१ की तारीखों से कलकत्ता के लोगों के मन के भावों का क्या परिचय मिलता है? उनकी द्वैशभाकि के कारण में क्या पता चलता है? वह यह सब क्यों कर रहे थे?

- प्र१८) अगर आप वहाँ पर होते तो आप कलकत्ता वासियों ने तो किया उसके अतिरिक्त क्या-क्या करते?

- प्र१९) लेखक ने सारे काम का बोझ "अपने कंधों पर सबझा" क्या कहनी किसी व्यक्ति को निष्पेशारी अपने ऊपर लेनी चाहिए? इससे व्यक्ति में कौन से गुण पूढ़ा देते हैं? उपर दिए गए कथन से लेखक की क्या मनोदृशा पता चलती है?

- प्र२०) स्वतंत्रता दिवस पर महिलाओं और युवकों ने क्या हातों का क्या व्यरुत्व था? आप यह सब लोग द्वेष के लिए क्या प्रोग्राम देते हैं?

- प्र०) लैंबक ने पाठ में कही भारपीट और गिरफ्तारियों का लिंग किया है तो कही शांतिपूर्वक नारों व डड़तालों का। आपके अनुसार क्या सही है - शांतिपूर्वक संघर्ष या प्रिय आजाही के लिए कुछ भी बाधिक है?
- प्र०) लैंबक ने क्षेत्र स्वतंत्रता प्राप्त दोनों से पहले "मानो स्वतंत्रता भिल गई हो" - कथन का प्रयोग किया है। क्या कुछ प्राप्त दोनों से पहले यह मान लेना कि वह आपको प्राप्त दोकर ही रही उचित है? आपके लिए साब ये उम्मीद और सपनों की क्या झूमिका है?
- प्र०) पुलिस द्वारा पाकों को बंदने से सरकार के किस अवकाश का संकेत भिलता है? क्या किसी विचारों के सम्बन्ध को छोड़ने से उच्चे छात्य किया जा सकता है?
- प्र०) अविनाश बाबू और रवि चूर्ण सिंह से आपको क्या प्रेरण मिली?
- प्र०) युआष बाबू के पुलिस के लाठीचार्ज और सज्जा सज्जी के बाहर भी पीटे न दें। आपके अनुसार सज्जा नहीं क्या देता है?
- प्र०) सरकारी नौटिस के बारे भी कौसिल ने छुलोम चलते हुए और अपना नौटिस निकाला। क्या उच्चे इक बार लोगों के बारे में सोचना नहीं चाहिए था, कि आम जनता को नियंत्रक संघर्ष सहना होगा? आपके अनुसार क्या सही था? यद्दि आप कौसिल की जगत देते तो क्या विरोध देते?
- प्र०) यदि आप इंडिया पुरुषों वाली टीली में देते हो, पुलिस की लाठियों देखकर आपकी क्या मनोहश होती?
- प्र०) बालंटियसे लाठीचार्ज के बाबत हुए आपने स्थान से न दें। इस तरह के छोर्य और साहस से आपको किन लोगों या चीजों की धारा आती है?
- प्र०) नृताज्ञों की गिरफ्तारी के बाहर भी उच्चालन नहीं होवा रहा लोगों के घायल होने के बाबत हुए लोगों की याच्चा बढ़ती रही। इन दोनों घटनाओं से लोगों के बारे में क्या पता चलता है?

प्रामिल प्रतिभा और अन्य व्यक्तियों के नाठीचार्व के बाद भी आदोलन जारी रखा व शाम तक 105 व्यक्तियों निरफार कर ली गई। इससे सरकार को क्या संतुष्टि मिला होगा? आज व्यक्तियों की क्रेस्ति कांति कहाँ दिख सकती है? क्या आज की व्यक्तियों पेसा कर सकती है? इससे आज की पीढ़ी को क्या सीधे विलती है?

प्राप्ति) बंगाल पर जो कलंक था क्या वह उत्तर गया? क्या आज भी किसी के छोड़ उपर कोई फ्रेसा कलंक है?

# कविता-४

Page No. 53

Date : 28/4/2025

## कहु भले हम भिट्ठा - कही आजमी

प्रश्न) क्या इस गीत की कोई सांतिहासिक पृष्ठभूमि है ?  
 उत्तर प्रस्तुत कविता 'कर चले हम भिट्ठा' उसके मानदंड  
 शायर कही आजमी की सुन्दर रचना है जो 1962 के भौं  
 भारत-चीन के बीच तिक्कत की घाटियों में हुए  
 युद्ध में शहीद हुए सैनिकों को अदृष्यांजलि हैं  
 के लिए ननी भिल्ले हकीकत के लिए लिखा गया है,  
 इस फिल्म के निर्माता चेतन आनंद हैं।

प्रश्न) सर हिमालय का नमने न छुकने दिया - इस पंक्ति में  
 हिमालय किसका प्रतीक है ?

उत्तर पंक्ति में हिमालय भारत की ऊन-ज्वान और शान का  
 प्रतीक है। हम अपने सिर कटवा हैं पर भारत की ऊन-  
 ज्वान और ज्वान को छुकने नहीं हैं, अर्थात् हूँमन  
 हैं को अपनी धरती पर पांव न रखते हैं।

प्रश्न) इस गीत में धरती को दुलदन क्यों कहा गया है ?

उत्तर इस गीत में धरती को दुलदन इसलिए कहा गया है  
 क्योंकि जिस प्रकार एक दुलदन लाल क्सी में सजी  
 रहती है उसी प्रकार भारतीय सैनिकों की शहादत से  
 सैनिकों के लद्द से धरती लाल हो गई थी। जिस  
 प्रकार एक प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए, एक पति अपनी  
 बीवी के लिए, तन-मन-धन सब कुछ कुर्बान कर देता  
 है ठीक उसी प्रकार सैनिक भी भारत की धरती की रक्षा  
 के लिए तन-मन-धन कुर्बान कर देता है।

प्र५) गीत में क्या क्या बात होती है कि वह नीतन भा  
याद रहते हैं?

उल्लर जो गीत आवश्यक होते हैं, एक सरकार संदेश हैं  
हैं, जिससे हमें प्रेरणा मिलती है, मिनके सुर, ताल  
आँख लाय अबू होते हैं और जीत दिलमें शब्द  
का अहंकार चयन होता है और जो गीत हमारी  
आवनाओं से ऐल छाते हैं उसे गीत हमेशा के  
लिए पाद रह जाते हैं।

प्र६) कवि ने 'साधियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए  
किया है?

उल्लर कवि ने 'साधियो' शब्द का प्रयोग दैशवासियों के संबोधन  
करने के लिए किया है, जो दैश की एकता और  
संगठन को दर्शाता है।

प्र७) कवि ने इस कविता में किस काफिले को आगे  
बढ़ाते रहने की बात कही है?

उल्लर कवि ने दैश के लिए बलिहान हूने वालों वीरों के  
काफिले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है, जो  
दैश की रक्षा और अखंता के लिए ज़रूरी है।

प्र८) इस गीत में 'सर पर कफन बोधना' किस और संकेत  
करता है?

उल्लर 'सर पर कफन बोधना' दैश के लिए शर्वस्व समर्पण  
और प्राणों की बलि हूने की तैयारी का प्रतीक  
है, जिसमें व्यक्ति भात का सामना करने के लिए  
तैयार रहता है और अपने प्राणों का भोग नहीं  
करता।

प्र४) इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखें।  
 उत्तर इस कविता में कवि ने उन सौनिकों के दृष्टिय की आवाज़ को बाज़ किया है, जिन्हें अपने द्वेष के प्रति किए गए हर कार्य, हर कहान्य, हर बलिहान पर गर्व है। इसलिए इन प्रत्येक द्वेषवासी से कुछ अपेक्षाएँ हैं कि उनके इस संसार से विद्या होने के पश्चात वे द्वेष की शान पर आँच न आने हों, बल्कि समय आने पर बलिहान होकर द्वेष की रक्षा करें।

### विचारात्मक प्रश्न-

- प्र१) कविता में 'वतन' को साथी के हवाले करने का भाव किस प्रकार की विश्वेषणी का प्रतीक है?
- प्र२) कविता में भूत्यु को उत्त्यन की तरह क्यों दिखाया गया है?
- प्र३) यहाँ आप सौनिकों की जगह होते ही और मातृता साथी होती, पर आपके कुछ साथी सौनिक आत्मसमर्पण कर होते हो तो आप क्या करते?
- प्र४) कवि ने कविता में कानसी पंजाबी रखी है?
- प्र५) कविता अनुसार द्वेषभक्ति सिर्फ युद्धधनेत्र तक सिवित नहीं। क्या आप इस विचार से सहमत हैं?
- प्र६) आज के लोगों को क्या कर, द्वेषभक्ति करनी चाहिए?
- प्र७) अब क्या प्रेरणा बिलती है?
- प्र८) अगर 'वतन' को आपके हवाले किया जाए, तो आप उसकी भलाई के उसे सुरक्षित रखने के लिए क्या करेंगे?
- प्र९) सभी द्वेषभक्ति में कर्ता-कर्ता से गुण होते हैं? क्या यह सब आज के नागरिकों में हैं?
- प्र१०) कविता में जैसा बलिहान दिखाया गया है, मगा वृसा बलिहान आज के आधुनिक युग में जारी है? क्यों वह क्यों नहीं?
- प्र११) इसली विजय क्या है - शारिक युद्ध या आधिक बलिहान?
- प्र१२) यह कविता किस राष्ट्रीय समस्या पर आज लागू होती है?

# पाठ-४

## अब कहो गीत के द्वय में द्वयी द्वयी गीत - निमा फाजली

प्रश्न नड़े बिल्डर समुद्र पीढ़ी क्यों धक्का रहे थे?  
उलर कई तालों से नड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को बढ़ा  
धक्का कर उसकी तर्बीन दिया रहे थे।

प्रश्न नेष्टक का घर किस राज्य में था?  
उलर वसीवा

प्रश्न जीवन कैसे घरों में सिमटने लगा ?  
उलर पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था अब  
द्वितीय में बैट्टर एक-दूसरे से हर जो छुका है।  
पहले बड़े-बड़े हूलानों-उआँगनों में सब मिल-जुला  
रहते थे अब छोटे-छोटे डिल्ले तक घरों में जीवन  
सिमटने लगा है।

प्रश्न कबूतर परेशानी से इधर-उधर को पड़फड़ा रहे थे?  
उलर गवालिपर में ~~खाली~~ भूमि के भकान थे उस भकान के हूलान  
में ही रंशनहान थी। उसमें कबूतर के एक नोडे ने घोंसला  
किया था एक बार एक निल्मी ने उचककर उसे  
में से एक अंडा तोड़ दिया। नेष्टक की माँ ने दूष्का तोड़  
उसे दुष्का दुआ। उसने दूष्का पर चढ़कर हूसरे अंडे की बच्चा  
की कोशिश की। लैकिन हूसरा उंडा हाथ से गिरकर  
दूष्का गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर पड़-फड़ा

प्र५) अरब में लशकर को नूड के नाम से क्यों याद करते हैं?  
 इसलिए अरब दूसरे पावन ग्रंथों में नूड नाम के एक  
 लेख शुगंबर का लिखा भित्ता है। उनका असली नाम लशकर  
 था लेकिन अरब उसे नूड के लकव से याद करते हैं। वह  
 इसलिए कि नूड यारी उभे रोते रहते। इसका कारण एक  
 ज़मी कुला या नूड के सामने से एक बार एक घापल  
 कुला गुज़रा। नूड ने उसे हुक्कारते हुए कहा, 'हुर तो  
 जा गंदे कुले!' इसलिए मैं कुलों की गंदा यमद्या जाता हूँ।  
 कुले ने उनकी हुक्कार का जवाब दी हुई कहा... न ऐ  
 अपनी मरी से कुला हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान  
 हूँ। बनाने वाला यहका तो कही उक हूँ। नूर उसकी बात  
 सुन चुयत तक रोते रहा।

प्र६) लेखक की माँ किस समय पढ़ीं को लोडवे से मना  
 करती थीं और क्यों?

इस लेखक की माँ कहती थी, सूरज ही जाँगब के छेड़ों  
 से पले मत तोड़ो, पढ़ो रोड़ो।

प्र७) प्रकृति में जाए असंतुलन का क्या परिणाम है?  
 इस फैलते हुए प्रौद्योगिकी की बहिर्पों से अगावा  
 शुरू कर दिया है। बारहों की विनाशकीलाऊ ने बाता-  
 करण को सताना उक कर दिया। अब गरमी वे द्याहा  
 गरमी, बैंकून की बरसातें, जलजले, सूखा, दूफान और  
 नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन  
 का परिणाम है।

प्र८) लेखक की माँ ने पूरा दिन रोजा क्यों रखा?  
 इस कबूतरों के अंते की बचाते बहने उनसे गती से  
 एक अंडा टूट गया। यह टूटकर लेखक की माँ  
 की ओंबो में आँख आ गए। इस घुनाह की छहा-

से मुझाक करने के लिए उसने प्ररा द्विन रोज़ा रक्खा। इन थर कुदू खाया-पिया रही। मिर्झी रोती ही उसे बाहर बार नमाज पढ़कर छुटा से इस इन्द्रियती की भाष्ट करने की हुआ माँगती ही।

प्रश्न लेखक ने गवालिपर से क्या तक किन बदलावों को भर सकते हैं?

उत्तर गवालिपर से क्या क्या की ही ने संसार को बदली कुदू नदलू दिया है। वसीका गे जर्सों लेखक का घर है, वहाँ पहले जंगल रोता था चेंड़ थे, परिष्ठें थे और हसों जानकर थे। अब यहाँ समुद्र किनों लंबी-चोटी बहली बन गई है। इस बहली ने न जाने कितने परिष्ठें करिए हैं उनका घर दीन दिया है। इनमें से कुदू शहर होड़कर अल गए हैं जो रही जा सके, उन्होंने घरों-वहाँ त्रैरा डाल दिया है।

प्रश्न) 'त्रैरा डालने' का क्या अर्थ है? उत्तर त्रैरा डालने का अर्थ है - अपने रहने की व्यवस्था बदला। यह स्वतंत्र रहने के लिए घर बनाता है, वहाँ उसी पहली भी अपने रहने के लिए, अंडे ही और बच्चों की देखभाल के लिए घोसले बनाता है।

प्रश्न) शीघ्र अयाज के पिता, भौजन होड़ बड़े क्या हुए? उत्तर उसी हूक घटना का लिक सिंधि भाषा के महाकवि रोष अपात ने अपनी आत्मकथा में किया है। उनके पिता हूक द्विन जब कुकुसे ले नहाकर आए और माँ ने उसे धोया तब उसे अपनी बातु भर कर खोटे हो गए दिखाई दिया। तब वह भौजन होड़कर खड़े हो गए और कहा कि वह पहले वह बैंधर घोटे को बाहर कुकुसे भर दोड़ आये,

प्रश्न) बड़ी हुई आकाशी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?  
उत्तर) बड़ी आकाशी ने उनिष्टिक्षित प्रभाव पर्यावरण पर उल्लंघन किया।

- समूहों को पीढ़ी धर्कें लगाना शुरू कर दिया।
- पैदों को रास्तों से नहाना शुरू कर दिया।
- प्रदूषण ने पौधों की वसियों को घायाया है।
- बास्ट की विनाशलीलाओं ने बातावरण को घायाया है।
- अब ग्रामी ये ज्यादा गवायी, बैंकों की बरसातें, बहलाली, खेतों, वृप्ताव, और नित नए दौड़, मानव और पृष्ठकुटि के इसी असंतुलन का प्रभाव है।

प्रश्न) लैखक की पत्नी को छिपकी थीं जानी क्यों लगाली गई?  
उत्तर) लैखक के पाँच के जनान थे और कब्जतरों का धोखना हुआ, वह अपने हाथों बच्चों को छिपाते थे। वह छिपके बैंकों के बार आते-जाते थे। लैखक इससे लैखक को परेशानी थी नहीं थी। वह कभी-कभी भी बच्चों को चिराकर तीड़ देते। कभी वह लैखक की लाइसेंसी में दुस जातो। इस तरह रोक-रोक तंग आकर लैखक की पत्नी ने छिपकी पर जाली लगाई।

प्रश्न) समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने गुस्सा क्यों लिया?  
उत्तर) कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर सच्चाह को पीछे धकेल उसकी जारी इत्रप थकर रहे थे। सच्चाह लगातार बिभट्टा गया। पहले उसने अपनी हाँगे लांबी, धोड़ा बिभट्टकर ढौँ गया। जगह कभी पड़ी तो उकड़ूँ बैठ गया। प्रियकर बड़ा ही गया। जब खड़े रहने की जगह कभी पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया। तो लिया बड़ा होता है, उसे उतना कभी गुस्सा आता है। परंतु जब आता है, तो रक्का मुश्किल हो जाता है। समुद्र ने भी इसाई किया, उसने एक रात अपनी नरों पर हाँकते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों

की गोड़ की तरह तीन टिशाउंस में पैक डिप्पा सुक की के समुद्र में जाकर गिरा, किनारे पर दूसरा नांदा भी काठर रोड के सामने गिरा, तीसरा गेटवे और उत्तिया पर टट-फटकर बिलावियों का नजारा बना।

## विचारात्मक प्रश्न-

- प्र१) यहि आपको जनवरों और पश्चियों की भाषा समझने के लिए जाए, तो आप इसका क्या उपचैर करेंगे?
- प्र२) मैं मुहब्बत हूँ, मुझे सीखत नहीं! यह क्यन आप आप के सामाजिक संदर्भ में कैसे लाए करेंगे?
- प्र३) उगर ऊज के नेता मुलमान जैसे हों, तो सामाजिक क्या बहलाव आता?
- प्र४) शेष अध्यात्म के पिता की जीर्णी के लिए की गई संवेदनालय से ऊज के समाज को क्या सीख लेनी चाहिए?
- प्र५) छह और कुले बली घटना मानव और जनवरों के संबंध को कैसे प्रस्तुत करती है?
- प्र६) जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना कम गुस्सा आता है। इस प्रकृति से हमें क्या सीख सिखती है?
- प्र७) माँ की कातों में मैं, फूल, फिरा, जनवरों से जुड़ी संवेदनालय किस सामाजिक-सांस्कृतिक दोष की दृश्यता है?
- प्र८) यहि लैखक की माँ की जगत कोई और दोता नहीं क्या करता?
- प्र९) क्या धार्मिक जास्या और पर्विरण-संरचना आपस में जुड़ सकते हैं?
- प्र१०) कबूलरों का कुक अंडा माँ से बिल्ली से होना में कैसे क्या है?